सप्तर्षि तारामंडल कैसे बना?

विश्व मोहन तिवारी

आकाश में बहुत सारे नक्षत्र मंडल दिखते हैं। लगभग बराबर तेज़ चमकने वाले तारों के ऐसे समूह, जो हमें एक एक तल में स्थित दिखते हैं, तारामंडल कहलाते हैं। 28 तारामंडलों (नक्षत्रों) का उपयोग तो हमारे पंडित पंचांग बनाने तथा पढ़ने में, कुण्डलियां बनाने, त्यौहार और मुहूर्त आदि निकालने में करते हैं। तारामंडलों के नाम पुराणों में रोचक कथाओं के रूप में भी आते हैं। और हमारे किसान भी इनका उपयोग मौसम या तिथियां जानने के लिए करते आए हैं।

सप्तर्षि तारापुंज सर्वाधिक लोकप्रिय है। इस लोकप्रियता के अनेक कारण हैं। यह तारापुंज फाल्गुन (फरवरी) से लेकर आषाढ़ (जुलाई) तक रात्रि के प्रथम तथा द्वितीय प्रहर में भारत के आकाश में स्पष्ट दिखाई देता है, और हम लोग गर्मियों में बाहर खुले में सोना पसन्द करते हैं और गर्मी की रातों में घूमना भी। सप्तर्षि की पहचान भी सरल है और इसकी मदद से हम अपने प्रिय ध्रुव तारे की स्थिति भी पता कर सकते हैं। इस तारापुंज के तारों के नाम भी हमारे परिचित ऋषियों के नाम पर हैं - कृतु (Dubhe), पुलः (Merak), पुलस्त्य (Phecda), अत्रि (Megrez), अंगिरा (Alioth), वशिष्ठ (Mezar) तथा मारीचि (कभी-कभी भृगु - Alkaid)।

अनेक तारामंडलों में, जो स्वयं ही एक विशिष्ट समूह होते हैं, कुछ तारे मिलकर एक और स्पष्ट समूह बनाते हैं। जैसे 'ग्रेट बेयर' तारामंडल में सप्तर्षि तारापुंज। ऐसे तारा समूहों को तारामंडल नहीं, 'तारापुंज' कहते हैं। वैसे कुछ विद्वान सप्तर्षि तारापुंज को तारामंडल ही हैं और अंग्रेज़ी में उसका अनुवाद 'ग्रेट बेर करते हैं।

आकाश में तारों का वितरण मात्र गुरुत्वाकर्षण तथा अदृय ऊर्जा के नियमों के अनुसार होता है। इनका संयोजन या इनकी जमावट किसी मानव जनित योजना का परिणाम नहीं होती है। अतः उनमें मानव हित या अहित सम्बंधी कोई भी प्रयोजन देखना उन पर काल्पनिक योजना थोपना ही है। किन्तु यह मानव स्वभाव है कि वह किसी भी वितरण में एक व्यवस्था या पैटर्न या योजना खोजता है, और साथ में अपने हित या अहित की संभावना।

सप्तर्षि का एक निश्चित-सा आकार दिखता है - ऐसा लगता है जैसे वे सात तारे हमसे लगभग बराबर की दूरी पर हैं। आकाश के किसी सीमित क्षेत्र के कुछ तारों में जब हम लगभग बराबर-सी चमक देखते हैं, तब हमें वे एक निश्चित पैटर्न में दिखते हैं। वह पैटर्न हमें अन्य तारों से अलग एक ही समतल में दिखाई देता है। वास्तव में सप्तर्षि के ये तारे हमसे लगभग एक समान दूरी पर न होकर विभिन्न प्रकाश वर्षों की दूरी पर स्थित हैं, और इनके बीच परस्पर गुरुत्वाकर्षण का विशेष सम्बंध भी नहीं है। कृतु तथा मारीचि तो अन्य पांच तारों से अलग दिशा में जा रहे हैं। अतः कोई एक लाख वर्ष बाद सप्तर्षि या ग्रेट बेयर का यह रूप नहीं रहेगा, और न पहले था। इनकी हम से दूरियां 55 से लेकर 93 प्रकश वर्ष हैं, और आपस में तो और भी अधिक दूरियां हैं।

बारीकी से देखें तो सप्तर्षि तारामंडल (constellation) नहीं, वरन तारापुंज (asterism) है। पश्चिम में सप्तर्षि तारापुंज का नाम 'डिपर' या 'plough' है। यह जिस तारामंडल का हिस्सा है उसका नाम 'ग्रेट बेयर' है क्योंकि यह अन्य तारों के साथ मिलकर एक भालू जैसा दिखाई देता है।

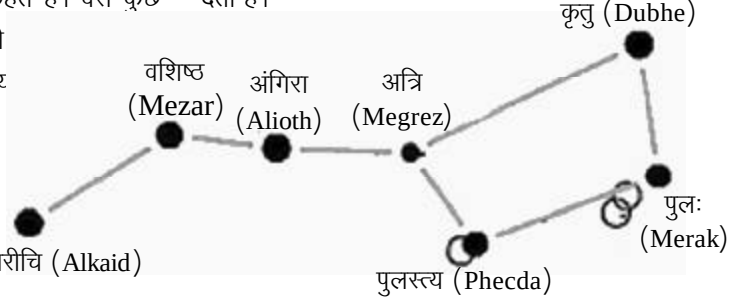

किन्तु दो समुदायों को यह दो अलग-अलग ढंग से दिखता है - एक के लिए जो पूंछ है वह दूसरे के लिए भालू का सिर है। यह प्रमाणित करता है कि इस तारामण्डल में भालू का रूप देखना उस पर अपनी कल्पना की सृजनशीलता थोपना है। यह तर्क सारे तारामंडलों पर लागू होता है।

सप्तर्षि का शीर्षस्थ तारा कृतु (Dubhe) तथा उपान्तिम तारा वशिष्ठ (Mezar) दोनों ही स्वयं में युग्म तारे हैं। युग्म तारे दो प्रकार से भ्रमण करते हैं - एक प्रकार के युग्म तारे में एक तारा दूसरे की परिक्रमा करता है, और दूसरे प्रकार में दोनों एक-दूसरे की परिक्रमा करते हैं। किन्तु Mezar युग्म का नाम वशिष्ठ तथा अरुन्धती रखा गया था। वशिष्ठ और अरुन्धती एक दूसरे की परिक्रमा करते हैं।

हिन्दू विवाह पद्धति में वर-वधू से आग्रह किया जाता है कि वे वशिष्ठ-अरुन्धति के दर्शन करें तथा जीवन भर उनके समान निष्ठापूर्वक रहें। दृष्टव्य है कि स्पष्ट इंगित किया जा रहा है कि केवल वर केन्द्र में न रहे, वरन दोनों ही एक दूसरे के लिए केन्द्र के समान रहें। पति-पत्नी की बराबरी का आदर्श रखा गया है। वशिष्ठ तो स्पष्ट दिखता है किन्तु अरुन्धती तारा अंधेरी रात के निर्मल आकाश में स्वस्थ आंखों से देखा जा सकता है। पश्चिम में अरुन्धती को तो पहली बार 1650 में जी. बी. रिचिओली ने देखा था। सुखद आश्चर्य की बात तो है।

एक और पद दृष्टव्य है: 'अरुन्धती दर्शन न्याय' जिसका अर्थ है कि स्थूल से सूक्ष्म की ओर जाना चाहिए। परिवार की इकाई स्थूल रूप से पति ही दिखता है किन्तु सूक्ष्मता से देखें तब पत्नी भी है। ज्ञान प्राप्त करने के लिए भी स्थूल ज्ञान से सूक्ष्म ज्ञान की ओर जाना चाहिए।

सप्तर्षि तारापुंज बना कैसे? सप्तर्षि तारापुंज का निर्माण तो आसमान में हमारे भाग्य से बेखबर बिखरे तारों को देखकर हमारी कल्पना शक्ति करती है। यही कल्पना शक्ति कला का, वैज्ञानिक सिद्धान्तों का, भूतों का भी निर्माण कर सकती है, वनों में छद्मावरण में छिपे बाघ और अजगर को पहचानने की क्षमता भी देती है। अलबत्ता हममें इतनी बुद्धि या विवेक भी है कि हम बाघों से बचें, किन्तु भूतों के चक्कर में न फंसें, खगोल के रहस्य को खोजें, किन्तु फलित ज्योतिषियों से बचें। ***(स्रोत फीचर्स)***